

सी बी आई
बु ले टि न

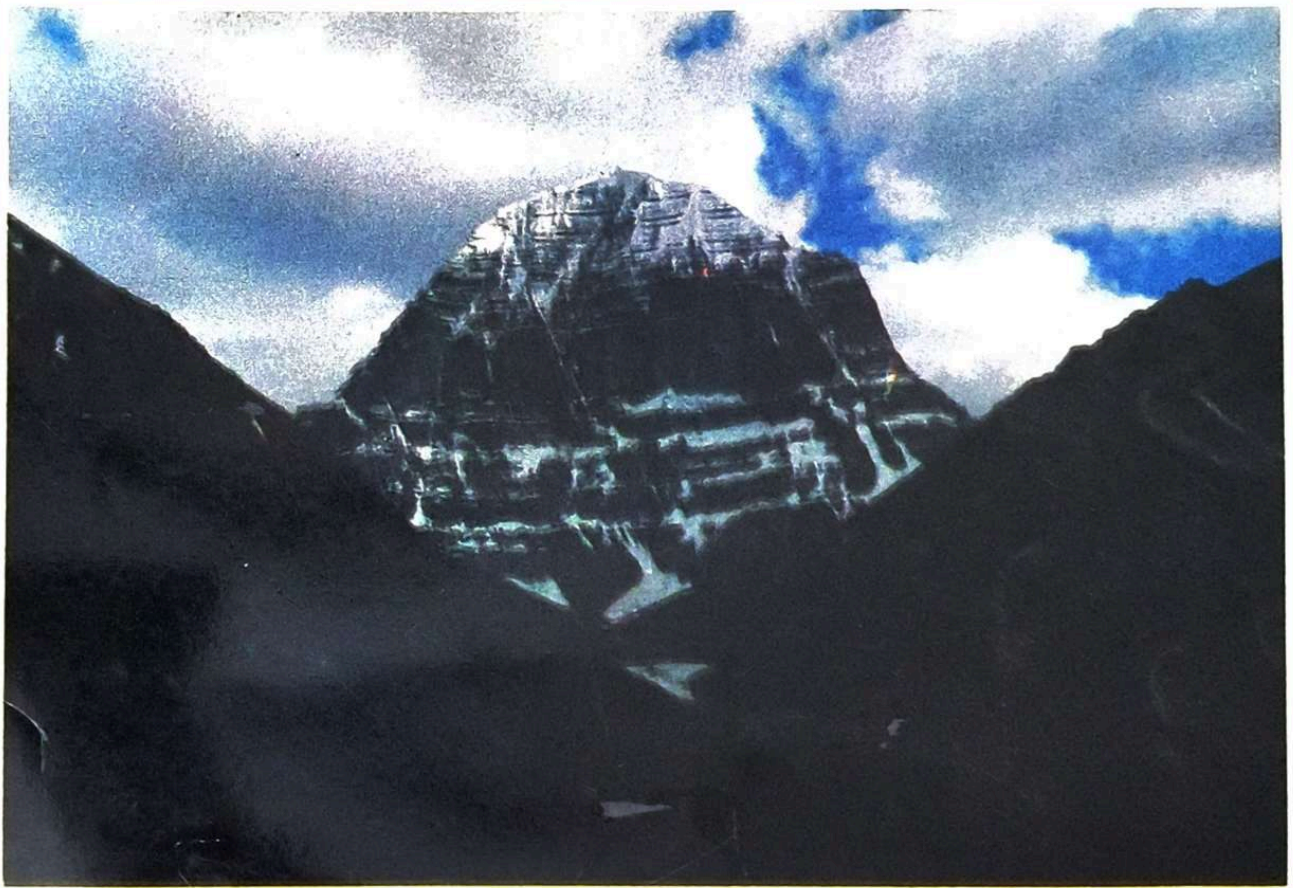


CBI
Bulletin

A CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION PUBLICATION

खण्ड 4, अंक 7—जुलाई 1996

Vol. IV, No. 7 — JULY 1996



RESTRICTED FOR POLICE USE

सी बी आई बुलेटिन



CBI Bulletin

A CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION PUBLICATION

खण्ड 4, अंक 7—जुलाई 1996

Vol. IV, No. 7—JULY 1996

CONTENTS

सम्पादकीय/EDITORIAL 2

निदेशक का संदेश/DIRECTOR'S MESSAGE 4

Humanism 6
—B.J.K. TAMPI

Anti-Corruption Laws and Public Servants 8
—R.C. DIKSHIT

A New Approach to Maintenance of Public Order 12
—K. SALEEM ALI

Custodial Crime: Causes and Remedies 17
—R.K. RAY

वेद के अनुसार जनता की रक्षा के लिए राज्य का कर्तव्य 20
—डॉ. (श्रीमती) उर्वी

Infra-red Spectroscopy: An Important Analytical Technique in Crime Investigation 22
—R.K. RATHORE and R.N. MEENA

IN HOME NEWS 26

NEWS & NOTES 29

LEGAL NOTE 31

BOOK REVIEWS/पुस्तक-समीक्षा 33

INTERPOL NEWS 35

INTERPOL NOTICES 41

EDITOR

RAJENDRA KAUL, Dy. Director (Coordination)

ASSOCIATE EDITORS

K.N. GUPTA, Asst. Director (Coordination)

H.C. SINGH, Asst. Director (Interpol)

Front cover: *Shiva's Abode*

by M.L. SHARMA—A recent pilgrim

Back cover: *Solitude: A view of English Countryside*

by N.R. WASAN, SP/CBI, New Delhi

OFFICIAL PUBLICATION OF THE
CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION (INDIA)

CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION
(Coordination Division)

Lok Nayak Bhavan (8th floor)

Khan Market, New Delhi-110 003. Tel. 4624884

The views expressed in the 'CBI Bulletin' are exclusively of the authors and do not correspond necessarily to the official views of the Central Bureau of Investigation.

RESTRICTED FOR POLICE USE

वेद के अनुसार जनता की सुरक्षा के लिए राज्य का कर्तव्य

डॉ. (श्रीमती) उर्वी

राष्ट्र का शासक तीनों प्रकार की जल, थल और वायु उत्तम सेनाओं और पुलिस बलों से युक्त, शक्तिशाली होता है। वह सर्वत्र फैले हुए अव्यवस्था आदि दोषों को देखने वाला होता है तथा जनता की सुख-सुविधा के लिए साधनों का निर्बाध रूप से संचार करता है। इस कार्य में विघ्न डालने वाले राष्ट्र के शत्रु या गुह्यारों को पकड़ना भी पड़े तो शासक उन्हें पकड़ कर उचित दण्ड देता है। ये चोर, डाकू या देशद्रोही (कुटिल गति जन) आदि पर्वतों या जंगलों के गुप्त प्रदेशों में छिपे होते हैं और वे अपना चोरी, डाके या तस्करी द्वारा अर्जित धन वहीं पर एकत्र करते हैं। वेद का निर्देश है कि शासक उस धन को प्राप्त करके जनता में बांट दे। निम्नलिखित मंत्र में इन्द्र के माध्यम से इसी प्रकार की भावना परिलक्षित होती है:-

अहन्नहिं पर्वते शिश्रियाणं, त्वष्ट्यस्मै वज्रं स्वयं ततक्ष।
वाश्रा इव धेनवः स्यन्दमाना अञ्जः समुद्रमव जग्मुरापः॥

- ऋ. 1.32.2

अर्थात् इन्द्र पर्वतों पर आश्रय लेने वाले अहि अर्थात् दुष्टों (तस्करों) पर वज्र से प्रहार (तर्दन) करता है जिससे उन स्थानों में स्का हुआ जल (धन) बहता हुआ समुद्र तक (विशाल जन समुदाय में) पहुंच जाता है अर्थात् जगत् को जीवन देता है। इस कार्य के लिए शासक का कर्तव्य है कि दुर्गों, पर्वतों आदि में भी छिपे हुए शत्रुओं को गुप्तचरों के द्वारा जानकर, छापा मारकर पकड़े तथा उन्हें कारागार में डाले, उनके द्वारा छिपाए गए धन को मुक्त करके उसका जनसामान्य की भलाई के लिए प्रयोग करे।

शासक अपनी बुद्धि का दुरुपयोग करने वाले तथा कपटपूर्ण कार्य करने वाले लोगों का नाश करे जिससे राष्ट्र में दिव्य प्रकाशमय सात्विक भावों का संचार हो अर्थात् जब राष्ट्र में कुटिल बुद्धि, धूर्त लोग नहीं रहेंगे तो राष्ट्र उन्नति करेगा, सभी लोग सात्विक विचारों वाले होंगे। एक कुटिल से अनेक कुटिल बन जाते हैं। वेद में ऐसे कुटिल व्यक्तियों के लिए मायी शब्द का प्रयोग किया गया है -

यदिन्द्राहन्नथमजामहीनामान्मायिनाममिनाः प्रोत मायाः।
आत्सूर्य जनयन्त्यामुषासं तादीला शत्रुं न किला विवित्से॥

- ऋ. 1.32.4

कपटपूर्ण कार्य करने वाले पहले ही व्यक्ति को तुरन्त दण्डित किया जाना चाहिए जिससे इस प्रकार का कार्य करने वाले दूसरे व्यक्ति उस दण्ड को देखकर पहले ही हतोत्साहित हो जाएं। राष्ट्र के लिए घातक कार्यों (जैसे तस्करी, घूस, ठगी) में लगे हुए अन्य लोगों को दुःखी करते हैं तथा स्वयं को बहुत बुद्धिमान एवं वीर मानते हैं। शासक उनके लिए कड़े नियम बनाए इन पर दृष्टि रखे क्योंकि जब-जब ये लोग पकड़े जाते हैं या मारे जाते हैं तब-तब सभी बुराइयों का अनावरण हो जाता है। इससे शासकों की नियंत्रण व्यवस्था और अच्छी प्रकार से चलती है। वस्तुतः स्वयं को शक्तिशाली समझने वाले इन लोगों के हाथ-पैर नहीं होते क्योंकि बुरे कार्यों में लगे हुए वे डरकर छिपकर रहते हैं। राज्य के भय के कारण वे स्वच्छन्द विचरण नहीं कर सकते। अतः न तो स्वच्छन्द चल सकते हैं, न ही खुले रूप में हाथों से

कुछ कर सकते हैं। ऋग्वेद के एक सूक्त में कहा गया है "हाथ-पैर रीति वृत्र ने इन्द्र के साथ युद्ध करना चाहा" - "अपादहस्तौ अपृत्यन्दित्रमाय वज्रमधि सानोजघान।" (ऋ. 1.32.7)। परन्तु इनका मस्तिष्क अव्यव कार्य करता रहता है। यदि शासक शक्तिशाली हो, बुद्धिमान हो तो इनका सर्वनाश हो सकता है। यदि शासक इन दुष्टों को नहीं पकड़ पाता तो वास्तव में वह शासक, शासक के पद पर रहने योग्य नहीं है। महाभारत में कहा गया है -

कालो वा कारणं राज्ञो राजा वा कालकारणम्।
इति ते संशयो मा भूद् राजा कालस्य कारणम्॥

शासकों द्वारा दुष्टों को पकड़े जाने से लाभ का वर्णन ऋग्वेद के निम्नलिखित दृष्टान्त द्वारा स्पष्ट हो जाता है -

पहले जब वृत्र ने जलों को रोक रखा था उसके कारण मेघ पृथ्वी पर वर्षण नहीं कर रहे थे जिससे पृथ्वी-वासी खिन्न हो रहे थे परन्तु वृत्र के मारे जाने पर (अर्थात् सूर्य की किरणों के द्वारा अन्तरिक्ष में स्थित मेघ पृथ्वी पर बरसे वर्षा के रूप में), उसके द्वारा रोके गए जल प्रवाहित होते हैं नदियां बहती हैं। उस जल से मनुष्य लाभान्वित होते हैं, ठीक उसी प्रकार जब कुटिलजनों को शासकगण पकड़ लेते हैं और उनके द्वारा एकत्र किया गया धन जनता की भलाई के काम में लगाया जाता है तो जनता बहुत प्रसन्न होती है -

नदं न भिन्नममुया शयानं मनो स्थाणा अति यन्त्यापः।
याश्चिद्वृत्रो महिना पर्यतिष्ठतासामहिः पत्सुतः शीर्षभूव॥

- ऋ. 1.32.8

शासक दुष्टों का नाश करे परन्तु इससे पहले उसका यह कर्तव्य बन जाता है कि वह दुष्टों की माता अर्थात् दुष्टों के मूल कारण का नाश करे। दुष्टों पर निगरानी रखना पर्याप्त नहीं है। शासक को उसकी गहराई में जाना चाहिए कि ये दुष्ट कैसे बने? बहुत बार पीड़ित निर्धन सज्जन होते हुए भी विवशता में चोर, डाकू, तस्कर बन जाते हैं। अतः शासक अपने राष्ट्र को समृद्ध करने के लिए सुव्यवस्था करे क्योंकि राष्ट्र के समृद्ध न होने पर पाप बढ़ते हैं। कहा भी जाता है- "बुभुक्षितः किं न करोति पापम्।" अर्थात् भूख कौन-सा पाप नहीं कराती अर्थात् भूख बढ़े से बड़ा (अपराध) पाप का देती है। अतः दुष्टों का नाश तो करना ही चाहिए साथ ही उनकी दुष्टता के मूल कारण का नाश भी करना चाहिए -

नीचावया अभवद् वृत्रपुत्रेन्द्रो अस्या अव वधर्जभार।
उत्तरा सूरधरः पुत्र आसीद्दानुः शये सहवत्सा न धेनुः॥

- ऋ. 1.32.9

प्रस्तुत मंत्र में इन्द्र द्वारा वृत्र के साथ ही उसकी माता के वध के उल्लेख से शासक द्वारा मूल कारण को नष्ट करने की भावना अत्यन्त स्पष्ट हो जाती है। इन्द्र शासक का प्रतीक है और वृत्र दुष्ट व्यक्ति का प्रतीक है। इससे यह संकेत प्राप्त होता है कि शासक को दुष्ट नहीं अपितु दुष्टता के मूल कारण को भी नष्ट करना चाहिए।